राज
कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 427
अश्वरवीर
अश्वराज
इस कामिक्स के साथ
अश्वराज का एक आकर्षक
स्टीकर मुफ्त

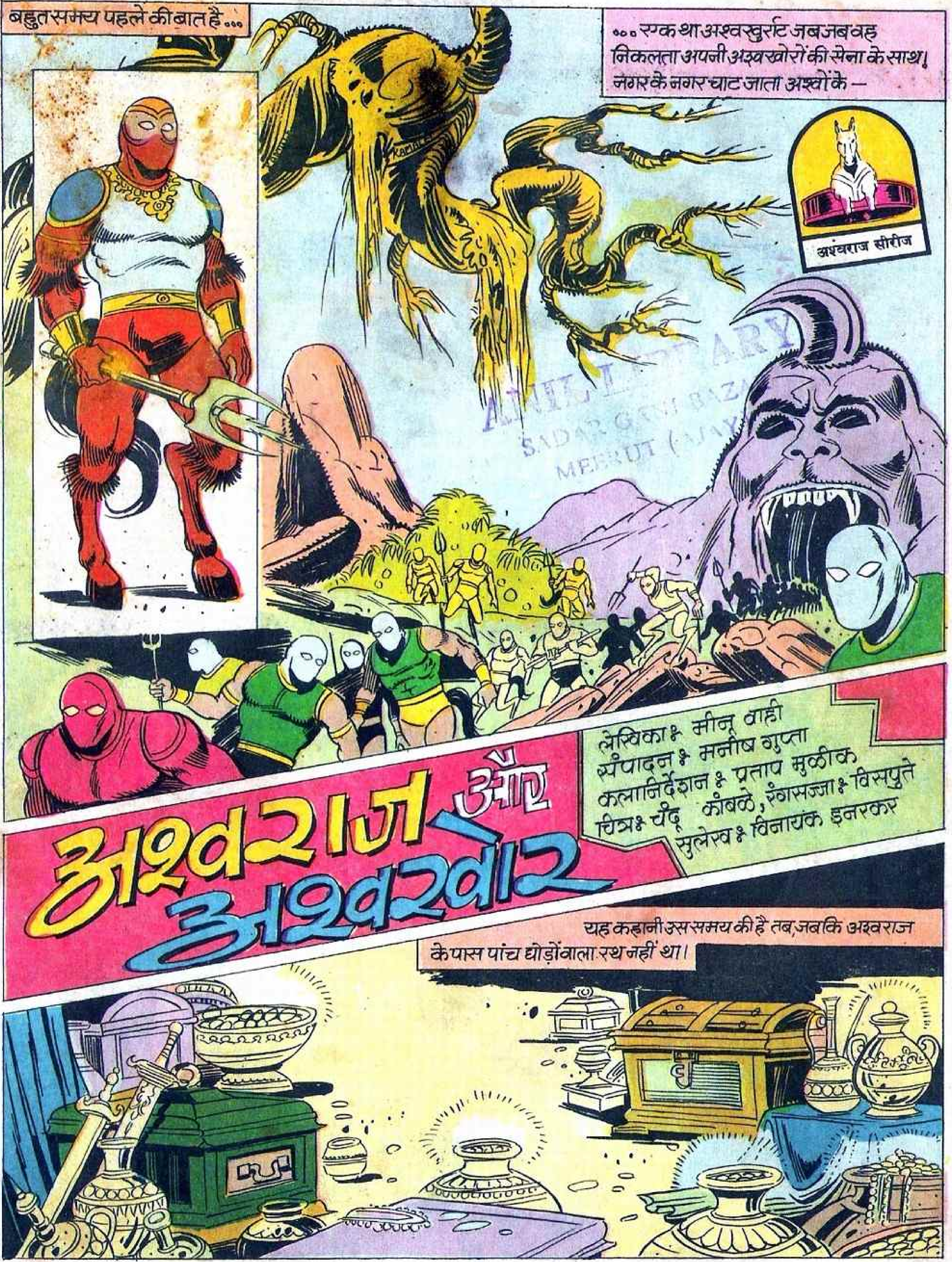

बहुत समय पहले की बात है...
...एक था अश्वखुर्राट जब जब वह निकलता अपनी अश्वखोरों की सेना के साथ। नगर के नगर चाट जाता अश्वों के –
अश्वराज सीरीज
लेखिका : मीनू वाही
संपादन : मनीष गुप्ता
कलानिर्देशन : प्रताप मुळीक
चित्र : चंदू कांबळे, रंगसज्जा : विसपुते
सुलेख : विनायक इनरकर
अश्वराज और अश्वखोर
यह कहानी उस समय की है तब, जबकि अश्वराज के पास पांच घोड़ोंवाला रथ नहीं था।

अश्वलोक के उस छोटे से बाजार में चारों ओर चहल कदमी छाई थी—
सोने की 'नाल' है, जरा कसकर लगाना इसे पांव में।
पांव निकल जायेगा अश्व भाई, खुरा की लगाई नाल हिलेगी भी नहीं।
बाजार के इस कोने से उठा शोर ....
न जाने क्या बात है?
... उस कोने तक सनसनी मचाता चला गया—
भागो! प्राण बचाने हैं तो भागो।
??
??
शीघ्र ही उस भगदड़ का कारण समझ में आ गया अश्वमानवों को—
अश्वखुरांट आया है। हा हा हा। घेर लो अश्व मानवों को।

टूट पड़ी अश्वखुर्राट की सेना!
बचना आसान न था—
अश्व कन्याओं के लिए भयानक संकट की घड़ी थी—
अश्वखुर्राट केवल नगर की धन-सम्पदा ही नहीं लूटता, बल्कि सुन्दरता का भी पुजारी है वो! हा हा हा!
अश्वसुंदरियां! वाह!
आह! छोड़ दे दुष्ट!
गाजर-मूली की तरह काट दिये गए अश्वमानव!
किसकी चलती थी शैतानों के आगे—
ये सोने की नाल मुझे दे दे अश्वमानव! हा हा हा हा!
नहीं!
तत्पश्चात आरम्भ हुई लूट!
लूट लो पूरे नगर को! चिड़िया का बच्चा भी जीवित नहीं है अब यहां!
दरिन्दे, अश्वखोर थे—
हा हा हा! अश्व गोश्त!
जहां होती है अश्वखुर्राट की सेना भोजन की वहां कमी नहीं! हा हा हा! पहले पेट पूजा, फिर काम दूजा!

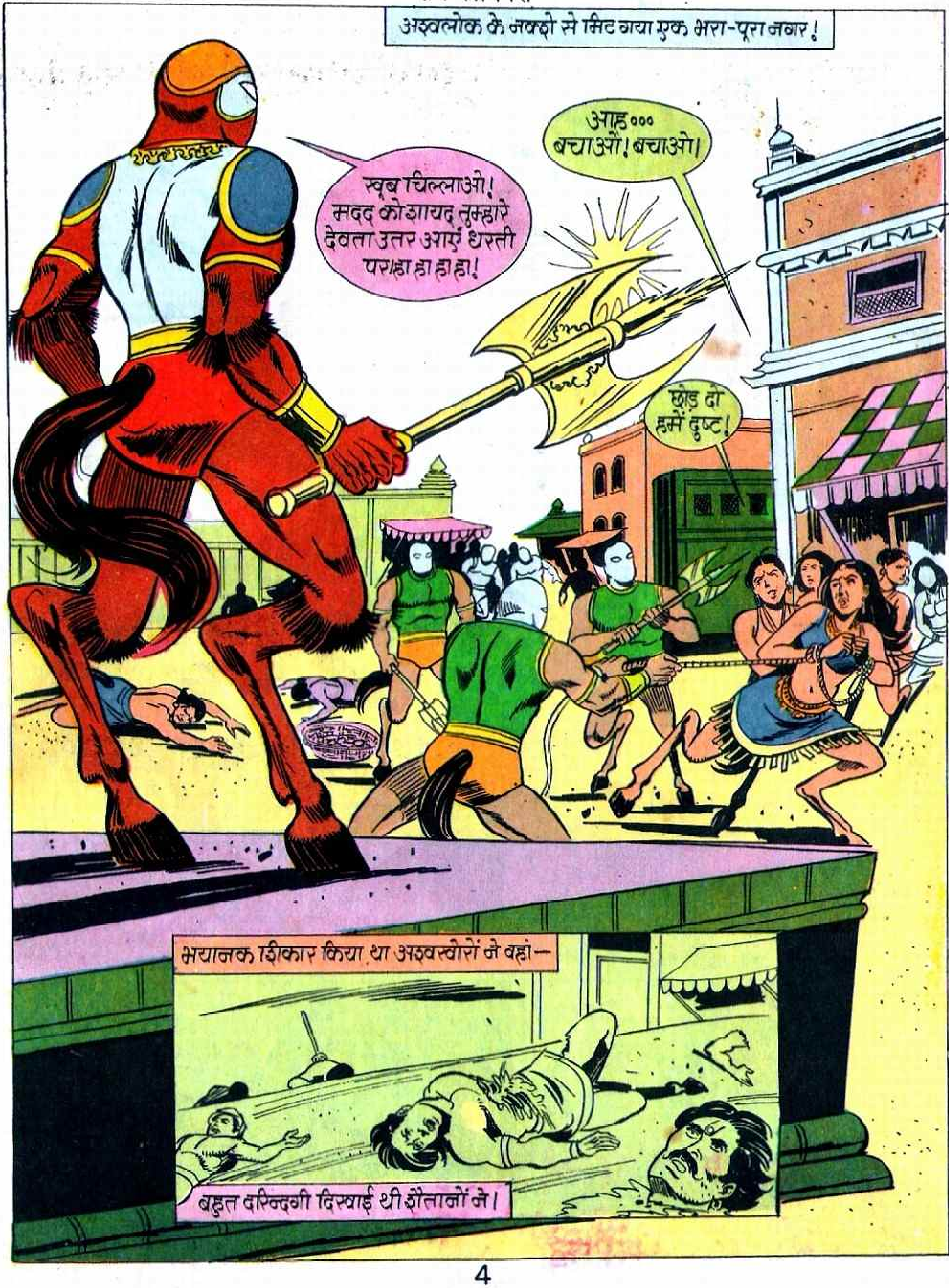
अश्वलोक के नक्शे से मिट गया एक भरा-पूरा नगर!
खूब चिल्लाओ! मदद को शायद तुम्हारे देवता उतर आएं धरती पर! हा हा हा हा!
आह••• बचाओ! बचाओ!
छोड़ दो हमें दुष्ट!
भयानक शिकार किया था अश्ववीरों ने वहां —
बहुत दरिन्दगी दिखाई थी शैतानों ने।

अश्वकोष्ठ नामक नगरी!
जहां के नागरिकों की चमड़ी का रंग सुर्ख था!
नगरी का राजा घटोत!
सेनापति रक्ताम्बर को बुलाओ!
हाजिर हुआ रक्ताम्बर!
आपने मुझे याद किया महाराज?
आओ, सेनापति रक्ताम्बर!
आसपास के राज्यों में अश्वखोरों का आतंक बढ़ रहा है!
सुना है बड़े ही क्रूर व जालिम हैं वे!
सेनापति रक्ताम्बर! जिन राज्यों में ऐसे खूनी हादसे हुए हैं, उनसे अधिक दूरी पर स्थित नहीं है अश्वकोष्ठ!
हम चाहते हैं कि वह मनहूस दिन आने से पूर्व ही हम उन क्रूर हत्यारों और लुटेरों का पता लगा लें!
यह आवश्यक भी है महाराज!

किसी निर्णय की झलक दिखाई पड़ रही थी सेनापति रक्ताम्बर की आंखों में —
मैं इस विषय पर पहले से ही गम्भीर हूं महाराज! आज मैं स्वयं आपसे उन अख्व-खोरों की खोज में जाने की अनुमति लेने वाला था!
ओह!
सेनापति रक्ताम्बर! तुम्हारे इस निर्णय से तुम्हारी दूरदर्शी सोच का पता चलता है।
हम चाहेंगे कि अख्वखोरों के नेता का सिर लाकर पेश करो हमारे सामने!
कोसों दूर देख सकती थी रक्ताम्बर की आंखें!
चारों दिशाओं में देखना होगा मुझे। मेरी निगाहों की हद में एक बार आ जाएं वे शैतान!
महाराज! अख्वता की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों पर खेल सकता है रक्ताम्बर मुझे आज्ञा दें महाराज!
जाओ रक्ताम्बर! सफलता तुम्हारे कदम चूमे।
अख्वता = मानवता जैसा एक शब्द।
अपनी सेना लेकर निकल पड़ा रक्ताम्बर!
मेरी दूरदर्शी निगाहों से बच नहीं सकेंगे अख्वखोर!

उसी प्रकार अश्वानिद से चला सेना नायक कालाखोर!
अब या तो मैं और मेरी सेना जीवित लौटेगी, अन्यथा अश्वखोर और उनका नेता!
अश्वांधरी से राजकुमार अश्ववट!
कसम खाई है। मर मिटेंगे या मिटा डालेंगे।
छोटे से राज्य नीलीघाटी से निकला स्वयं राजा नीलकंठ—
जो कफन बांधकर ही निकले हों, उन्हें मृत्यु का कैसा भय?
अश्वोक से कूच किया महाबली श्रव्यशक्ति ने—
महाबली श्रव्यशक्ति •• जिन्दाबाद•••
अश्वखोर मुर्दाबाद
बढ़ रही थी पांच महारथियों के नेतृत्व में पांच सेनाएं। लक्ष्य एक ही था अश्वखोरों का अन्त—
सूंघ रही हैं मेरी नासिकाएं किसी सेना की गंध?
पांव के निशान संकेत कर रहे हैं। गुजरी है कोई सेना इस राह से।
सुन रहे हैं मेरे कर्ण किन्हीं बहुत से अश्वमानवों के स्वर।
पशु-पक्षियों•••पेड़-पौधों की भाषा मुझे पहुंचा रही है मेरे लक्ष्य के निकट।

रक्ताम्बर, कालाखोर, अश्ववट, नीलकंठ और श्रव्यशक्ति!
शायद अश्वखोरों की तलाश में निकले अन्य दल हैं ये।
दरिन्दों की शक्ल पर उभर आती है उनकी दरिन्दगी। और ये सब तो...
इनमें से एक भी दल अश्वखोरों का नहीं।
मुझे रक्ताम्बर कहते हैं।
मुझे नीलकंठ।
मुझे अश्ववट।
मुझे कालाखोर।
और मुझे श्रव्यशक्ति।
मेरा लक्ष्य अश्वखोर है..
मेरा लक्ष्य अश्वखोर...
ठहरिये। शायद हम सबका लक्ष्य अश्वखोर है!
सेनापति रक्ताम्बर पूर्णतयः गम्भीर था—
कैसा विचित्र संयोग है कि हम पांच दल, जिनका लक्ष्य एक है, एक ही स्थान पर आ मिले हैं।
कालाखोर कह उठा—
क्यों न 'हम पांच' 'एक' हो जाएं?
बन जाएं मुट्ठी!
मैं कालखोर से सहमत हूं।

चूंकि यह समस्या किसी एक राष्ट्र या राज्य की नहीं है इसलिए हम सब सहमत हैं काला-स्वोर की बात से।
हम सबकी संयुक्त शक्ति से जीत नहीं पायेंगे अश्वखोर।
रक्ताम्बर ने आगे कहा —
तुममें से कोई भी अगर कोई विशेष शक्ति रखता है तो बताए, जैसे मैं मीलों दूर तक देख सकता हूं।
मैं मीलों दूर की सुन सकता हूं।
मैं किसी भी संकट के क्षणों को सूंघ सकता हूं।
मैं पशु-पक्षियों व पेड़-पौधों की भाषा समझ सकता हूं।
मेरे विषय में आप वक्त आने पर स्वयं जान जायेंगे।
इस प्रकार एक हो गईं वे पांच शक्तिशाली सेनाएं —
आगे बढ़ो!!! चप्पा-चप्पा छान डालना है हमें, अश्वखोरों की तलाश में।

और!
ठहरो!
क्या देखा रक्ताम्बर?
खतरा!
किसी संकट को सूंघ रही हैं मेरी नासिकाएं!
मौत की आहट!
निकट से ही गूंज रही थी मौत की आहट!
अश्वखुर्राट आया है! बचे न एक भी दुश्मन!
इधर चीख पड़ा कालाखोर!
सावधान! दुश्मन आ रहा है!
चारों ओर फैल जाओ एक भी अश्वखोर जीवित बचकर न जाने पाए!
बेहद जबरदस्त आक्रमण था अश्वखुर्राट का—
मार डालो! लूट लो, हाथियारों के जखीरे!
चारों ओर से घेरा डाला था अश्वखुर्राट ने—
मारो
उफ! अश्वखोर!
मारो!

खून से लाल होने लगा भूमि का वह छोटा सा हिस्सा।
खच्याक
लाशों के ढेर लगा दिये अश्वखुर्राट ने —
मच्छरों की सैकड़ों सेनाएं मिलकर भी मेरा और मेरे सैनिकों का क्या बिगाड़ सकती हैं। हा हा हा।
उफ! अश्वखुर्राट के चारों ओर चक्रव्यूह सा रच रखा है इन सैनिकों ने।
रक्ताम्बर, कालाखोर, अश्ववट, नीलकंठ और श्वयशक्ति! तूफान की तरह मारकाट मचाते हुए अश्वखुर्राट के निकट पहुंचने का प्रयास कर रहे थे —
इस चक्रव्यूह को तोड़े बिना अश्वखुर्राट तक पहुंचना नामुमकिन है।
हा हा हा

विजय हुई अश्वखुर्राट की—
अश्वखुर्राट का सिर लेने आए थे? अब तुम सबके सिर मेरे रहमो-करम पर हैं।
उफ! पराजय का मुख देखने से पूर्व मृत्यु क्यों न आ गई हमें।
अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराता रहा अश्वखुर्राट—
किंतु घबराओ नहीं। मैं तुम्हें मौत नहीं दूंगा। एक खेल खेलूंगा मैं। तुम पांचों मेरी कैद में रहोगे। अब देखना यह है कि अश्वलोक में क्या कोई ऐसा भी है जो तुम्हें मेरी कैद से स्वतन्त्र करा सके।
शक्ति के मद में चूर है ये।
अश्वलोक में जंगल की आग की तरह फैला रक्ताम्बर, कालाखोर, अश्ववट, नीलकंठ और श्रव्यशक्ति की कैद का समाचार!
नहीं!
उफ!
हमारी विशाल सेनाओं के शवों की भी दुर्गति हो रही है। उस रणभूमि में।
नहीं!
अश्वलोक के कई राज्यों के सम्राट मिलकर भी न ढूंढ़ पाये उस समस्या का हल-
अगर अश्वखोरों और अश्वखुर्राट को शीघ्र ही सबक न सिखाया गया तो वह भयानक मुसीबत बन जायेगा पूरे अश्वलोक के लिए।
नहीं! एक राह है उस संकट से निजात पाने की।
वह क्या?

सूर्यवंशी अश्वसम्राट तारपीड़ो —
हमने भी सुना है अश्वखोरों के बारे में! किंतु यह समस्या इतनी विकट हो जायेगी, यह हम नहीं जानते थे।
हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि अश्वखोरों का आतंक अब अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सकेगा।
रक्ताम्बर, कालाखोर, अश्ववट, नीलकंठ और श्व्यशक्ति को दुष्ट अश्वखुराट की कैद से स्वतन्त्र करवाने का भरपूर प्रयास करेंगे हम।
कुछ देर बाद —
अश्वराज को बुलाओ तुरन्त।
जो आज्ञा अश्वसम्राट!
अश्वराज! महाबली! महाअश्वमानव! विलक्षण!
नारियों से गूंज उठा वातावरण —
चीते सी फुर्ती है अश्वराज के हाथों में।
वाह!

तभी—
अश्वसम्राट तुरन्त आपसे मिलना चाहते हैं युवराज!
पिताश्री मिलना चाहते हैं। किंतु ये समय तो मेरे अभ्यास का है।
ठीक है। मैं अभी पहुंचता हूं।
शीघ्र ही—
चरणस्पर्श, पिताश्री!
चिरंजीव रहो!
पुत्र अश्वराज! सम्पूर्ण अश्वलोक पर एक भयानक संकट मंडरा रहा है। और इस संकट का नाम है अश्वखुर्राट!
मैं समझ गया पिताश्री! आगे आपको अब कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। मुझे आज्ञा दीजिए, ताकि मैं सफल होकर लौट सकूं।
अश्वराज निकल पड़ा मौत के अभियान पर—
अश्वखुर्राट की मौत आ गई है अब!
रक्ताम्बर! कालाखोर! अश्ववट! नीलकंठ और श्रव्यशक्ति! अधिक समय तक दुष्टों की कैद में नहीं रहने देगा अश्वराज तुम्हें!

चन्द्रवंशी सम्राट अश्वांतक की भृकुटी तन गई—
अश्वराज, अश्वखुर्राट और उसकी अश्वखोरों की सेना को मारकर उन पांचों को स्वतंत्र कराने निकला है ?
अगर इस समय मैं अश्वराज को मार दूं, तो सम्पूर्ण अश्वलोक के छोटे-छोटे राज्यों के राजा फिर मदद के लिए मेरे पास ही आयेंगे।
यह करारी शिकस्त होगी सूर्यवंशी अश्वसम्राट तारपीड़ो को। हा हा हा हा हा।
प्राप्त सूचनाओं के आधार पर बढ़ा चला जा रहा था अश्वराज!
पहले उसी स्थान तक पहुंचना होगा मुझे, जहां पंच सेना और अश्वखोरों के बीच घमासान युद्ध हुआ।
चौंक पड़ा अश्वराज—
अगर वहीं जाने की इच्छा है अश्वराज, तुम्हारी तो तुम्हें स्वयं ये कष्ट करने की क्या आवश्यकता है॰॰॰
?!?
पलट गया अश्वराज!
कौन हो तुम? सामने आओ।

पर सामने आई सीधी मुसीबत !
मुझे अच्छी तरह देख लो अश्वराज भैया, क्योंकि मैं अपने दुश्मन को तड़पने का भी अवसर नहीं देता। फिर न कहना कि कौन हूं मैं? ही ही ही।
अरे, हां! अपना नाम तो मैंने तुम्हें बताया ही नहीं।
अश्वराज भैया। मेरा नाम है डरपोक। ही ही ही।
ओह! इसने तो जकड़ लिया है मुझे। इसकी कैद से छूटना पड़ेगा।

डरपोक की तो वह हल्की सी हरकत थी, पर बुरी तरह तड़प उठा अश्वराज –
दर्द हो तो बताना अश्वराज! ही ही ही!
उफ़!
अश्वराज को उस मुसीबत से शीघ्र ही पीछा छुड़ाना था –
अगर जल्दी ही इसका उपाय न किया तो ये मेरा उपाय कर देगा!
तोड़ डाले अश्वराज ने वे दो पंजे –
ओह! मेरे पास अभी कई और पंजे व शिकंजे हैं अश्वराज!
कड़ाक
अश्वराज की गर्दन पर झपटा वह शिकंजा –
चीर डालेगा ये शिकंजा मेरी गर्दन!
कुछ देखकर बुरी तरह चिहुंक उठा अश्वराज –
बाल-बाल बचा था वह!
क्रोध आ गया अश्वराज को अब –
एक बार मेरी तलवार मेरे हाथ आ जाए!

सम्पूर्ण शक्ति जुटा दी अश्वराज ने उस कैद से स्वतंत्र होने में—
अब देखता हूँ तुझे शैतान!
खींच ली उसने अपनी तलवार—
विद्युत की तेजी के साथ तलवार लपकी दुश्मन की ओर —
दुश्मन की चीख गूंज उठी—
आह!
रक्त से लथपथ हो उठा डरपोक का चेहरा—
उफ! मेरी खोपड़ी खल्लास कर डाली तुमने अश्वराज!
मैं तेरी खोपड़ी के बीस टुकड़े कर दूंगा अश्वराज!

आह!
लो! मेरी खोपड़ी के बीस टुकड़े करने का अरमान दिल में लिए ही चला गया।
पर यह था कौन? मेरा नाम कैसे जानता था ये? कहीं अश्वखुरंट का भेजा हुआ तो नहीं था ये!
प्रश्न दिल में लिए ही आगे बढ़ा अश्वराज—
वक्त-बेवक्त इस प्रश्न का उत्तर भी मिल ही जायेगा। फिलहाल मुझे अश्वखोरों की खोज में आगे बढ़ना चाहिए।
और—
उफ!
लहू से लाल हुई धरती देखकर सिहर उठा अश्वराज—
अश्वखोर अपने साथियों के शव उठा ले गए लगते हैं।
लेकिन अब उनकी लाशें उठाने वाला कोई जीवित नहीं रहेगा अश्वखोरों में।

अश्वसुराट की गुफा में चल रहा था वह भयानक खेल—
हा हा हा! रक्ताम्बर! कालखोर! अश्ववट! नीलकंठ और शल्यशक्ति! तुम्हारे पांवों में ये सुइयां धंसाई जायेंगी, ताकि तुम यहां से भागने की चेष्टा न कर सको।
अश्वखोरों ने आरम्भ किया यातना का वह दौर—
??
मुख से 'आह' तक न निकलने दी थी उन अश्व महारथियों ने—
अब तुम भागना चाहकर भी भाग न पाओगे। क्योंकि पांवों में धंसी ये सुइयां तुम्हें भागने न देंगी!
क्रोध से बिफर पड़ा रक्ताम्बर—
यहां से जायेंगे तो तेरा सिर साथ लेकर शैतान!
ओह! रस्सी जल गई, पर बल नहीं गया। इसी स्थान पर पांच कंकाल कैसे लगेंगे, काश! तुम भी देख पाते वह दृश्य। हा हा हा।
भूखे-प्यासे ही लटके थे पांचों सेनानायक!

अश्वस्वर्राट ज़िन्दाबाद!
ओह! गुप्तचर!
क्या समाचार लाए गुप्तचर?
पांचों सेनानायकों को स्वतन्त्र कराने निकल पड़ा है एक अश्वमानव!
सुनकर खूब हंसा अश्वस्वर्राट!
आहा हा हा हा! एक अश्वमानव! सिर्फ एक अश्वमानव?
आत्महत्या करने का शौक है क्या उसे? हा हा हा हा! क••• क्या नाम है उस बेचारे का। हा हा हा।
हंसी थम नहीं पा रही थी उसकी!
जी••• अश्वस्वर्राट! उ••• उसका नाम है अश्वराज!
हलक में ही दम तोड़ गई उसकी हंसी—
क••• क्या? अ••• अश्वराज?
अश्वसम्राट तारपीड़ो का पुत्र अश्वराज?
बुरी तरह से चिहुंक पड़े पांचों सेनानायक भी—
अश्वराज!
महाबली अश्वराज!
महा अश्वमानव अश्वराज!
इच्छाधारी अश्वराज!
बहुत इच्छा थी अश्वराज से मिलने की मेरी। उफ!
लक्ष्य प्राप्त कर लेने से पूर्व रुक जाना अश्वराज की प्रकृति में नहीं था। बढ़ा चला जा रहा था वो—
रौंदी गई झाड़ियां। उजाड़े गए फलों के ये वृक्ष और नीचे बिखरे पड़े अधखाए फल साबित कर रहे हैं कि गुजरा है कोई तूफान इधर से••

...और वह तूफान यकीनन है अश्वखोरों का!
सच कहा था अश्वराज ने—
इस पथरीले मैदान से होकर गुजर रहे हैं किन्हीं पांवों के चिन्ह।
और कैसी हैं ये चट्टानें? कैसा है इनका स्वरूप?
अरे!
तभी चौंक पड़ा अश्वराज।

पर तब तक हो चुकी थी कुछ देर—
आह
तड़ाक
उफ़!
कई और चट्टानें भी शस्त्र लेकर टूट पड़ीं अश्वराज पर, जो दरअसल थे अश्वखोर!
हा हा हा हा
हाहाहा
ओह
तड़ाक
इस बार फुर्ती दिखाई अश्वराज ने भी; और—
खनाक
पर वहां तो सैकड़ों अश्वखोर थे—
आओ! आओ!. धोखे से वार करने का दंड भी तो देगा अश्वराज तुम्हें!
खनाक
विद्युत सी गिरने लगी अश्वराज की तलवार से—
खचाक

आह
उफ्फ!
अश्वराज की तलवार चलती है तो क्षण भर में उड़ती हैं बीसियों गर्दनें —
छ्याक
और बन गया चक्रव्यूह!
ओह! चारों ओर से घिर चुका हूं मैं!
इस चक्रव्यूह से बाहर आने के लिए अब मुझे बनना होगा...
...इच्छाधारी...
अश्वराज
स्वांय

अश्वराज अब रुकेगा दुश्मनों के सैकड़ों सिर काटने के बाद।
टूट गया चक्रव्यूह—
पीछे से आ रहा था वह दूसरा अन्तिम सिपाही
बोल! बता! कहां है अश्वखुरांट?
अश्वराज पर वार करने का स्वप्न देख रहा था वह मूर्ख—
बेहद हिंसक हो उठा अश्वराज।
मुझे मेरा प्रश्न दोहराना पड़ेगा क्या?
नहीं! मैं तुम्हें वहां ले चलूंगा।
गूंज उठी अश्वखोरों की गुफा अश्वराज की दहाड़ से—

अश्वराज की निगाहें स्थिर हो गईं उस दृश्य पर—
ओह! पंच सेनाओं के पांच महानायक!
ऊं
ऊंऊं!
इसी पल जैसे मृत्यु झपट पड़ी अश्वराज पर—
उफ! नहीं!
धड़ाक
ओह, नहीं!
इस बार हुआ पचासियों तलवारों का आक्रमण—
बाल-बाल बचा!
ओह!
इस बार उछलने के साथ ही अश्वराज ने पांचों सेना नायकों के बंधन काट डाले—
धोखे से किए जा रहे इन आक्रमणों में इनका अहित हो सकता है!
पांव जमीन से टकराते ही पांचों के मुखों से सिसकारियां सी निकल गईं—
आह!
उफ!
पर उन्होंने न केवल वह दर्द ही बर्दाश्त किया, बल्कि निकाल फेंकी वह सुइयां भी!

हथियारों के जखीरे से जो शस्त्र मिला, अपने अधिकार में कर लिया उन्होंने—
अश्वराज! अश्वखुर्राट अकेला बचा है अब। उसकी सेना के एक-एक सैनिक को तुम चक्रव्यूह में समाप्त कर आए हो!
सामने आ गया अश्वखुर्राट!
हां! किंतु मैं अकेला ही बिछा दूंगा तुम सबकी लाशें!
अ श्व खु र्रा ट?
हा हा हा
हा हा हा हा
बचो
बचो
रक्ताम्बर, श्रव्यशक्ति, नीलकंठ व कालाखोर न बच पाए उस हमले से।

उफ इन्हें क्या हुआ?
इनकी यह पुकार मैं समझ पा रहा हूं अश्वराज! धमाकों ने इनकी बोलने की शक्ति छीन ली है।
चार वीर अपनी आवाज गंवा बैठे वह तो शुक्र है कि अश्ववट समझ सकता है उनकी कराह तक।
गुफा में चारों ओर छा गया भीषण धुआं—
हा हा हा! सब खत्म हो गए। इन बारूदी तीरों की मार से कोई नहीं बच सका। हा हा हा हा हा हा।
मेरे बारे में तुम्हारे क्या ख्याल हैं अश्वखुर्राट!
त ००० तुम?
इस बार अश्वराज ने उसे शस्त्र संभालने का अवसर नहीं दिया—
अश्वखुर्राट! अश्वता के लिए भयानक संकट है तेरा जीवन ०००
००० इस जीवन का अन्त अब बहुत आवश्यक है।
अश्वराज ने अब सम्भलने का अवसर नहीं दिया उसे—
श्रव्यशक्ति, कालखोर, नीलकंठ व रक्ताम्बर की आवाज छीनने के बदले मिलेगी तुझे मौत।

निहत्थे पर मैं स्वयं अपने हाथों से वार नहीं करूंगा।
अश्वराज ने वार किया छत पर उभरी उस नुकीली चट्टान पर—
कड़ाक
और चीख पड़ा नीचे गीरा पड़ा अश्वखुर्राट—
ख़चाक
आह्ह्ऽऽ
फिर जब अश्वखुर्राट के चेहरे से नकाब हटाई अश्वराज ने तो उछल पड़ा रक्ताम्बर तो—
अश्वखुर्राट का अन्त हो चुका है मित्रो!
क्या तुम इसे जानते हो?
रक्ताम्बर कह रहा है कि अश्वखुर्राट के रूप में स्वयं महाराज घटोत है।
रक्ताम्बर ने घटोत के विषय में बताया तो आश्चर्यचकित रह गए सभी।
तब—
अश्वराज! हम सब अश्वखुर्राट के हाथों पराजित हो चुके हैं। अब हम जीवित नहीं रहना चाहते। हम सामूहिक रूप से अपने प्राणों का त्याग करेंगे। यह हमारा अन्तिम फैसला है।
क्या?

अश्वराज ने ही निकाला उन सबकी भी समस्या का हल—
मित्रो! अगर यही तुम्हारा अंतिम फैसला है तो सुनो, तुम पांचों सेनानायक हो अपनी सेना के। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम पांचों जीवित भी रहो और मेरे साथ भी।
यह कैसे मुमकिन है अश्वराज?
तुम पांचों अश्वरूप में मेरे वाहन बन जाओ। इस प्रकार तुम्हें अपने प्राणों का त्याग नहीं करना पड़ेगा और मेरे साथ रहकर तुम समय-समय पर अश्वता की रक्षा के लिए मेरी मदद भी कर पाओगे।
इस प्रकार अपनी पराजय के दुःख को भी भूल सकोगे तुम!
अश्वराज के निर्णय से सहमत हुए पांचों सेनानायक—
अश्वराज! तुम्हारे साथ रहकर जीवन सफल हो जायेगा हमारा। हमें तुम्हारा ये प्रस्ताव मंजूर है अश्वराज! हम बनेंगे तुम्हारे वाहन!
वाह!
इन्हें असमय मृत्यु से बचाने का फिलहाल यही उपाय था मेरे पास।
पांचों सेनानायक बन गए अश्वराज का वाहन।
वाह! तुम्हें पाकर मैं भी धन्य हो गया अश्वमित्रो!
तुम महान हो अश्वराज!

If You Like This Comics. Please Buy iT , whenever avaliable And Support

RAJ COMICS

BAT